Dr. Krishan Verma Piles Clinic Dadri Since 1998

Opposite Bus Stand, Charkhi Dadri, Distt. Bhiwani, Haryana (India).

Dr. Krishan Verma

B.A.M.S., M.D.(A.M.), LL.B

Mob. +91 9996405464, +91 9416126910

Visit – http://www.pilesclinicdadri.com/ for detailed information.

बवासीर आखिर है क्या ?

यह मलद्वार में होने वाली सर्वव्यापी बिमारी है जो अधिकतर आलसी जीवन व्यतीत करने वाले लोगों को होती है। इस बिमारी में गुदा भाग की रक्त वाहिनियां फैल कर गुच्छे का रुप धारण कर लेती हैं, जिसे बवासीर का मस्सा, अर्श, हिमोराईडस (Hemorrhoids), या पाईल्स (Piles) कहा जाता है। पाईल एक लैटिन अक्षर पाईला (Pila) से बना है जिसका अर्थ गेंद होता है। हिमोराईड एक ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ खून बहना होता है।

बवासीर के प्रकार व लक्षण - आम नागरिक इसे खूनी व बादी दो प्रकार की मानते हैं। खूनी बवासीर आंतरिक बवासीर होती है, जिसमें मस्से गुदा भाग में अंदर की तरफ होते हैं। इसमें मरीज को शौच के बाद आमतौर पर बूंद - बूंद करके या धार की तरह खून बहता है, इसलिए उसे खूनी बवासीर कहा जाता है। बादी बवासीर में मरीज को खून गिरने की शिकायत नहीं होती। उसे केवल गुदा से कुछ मस्से बाहर को निकलते महसूस होते हैं, और तेज दर्द होता है। एक अन्य वर्गीकरण में इसे प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ श्रेणी बवासीर माना गया है। इन सभी में मरीज को सामान्यतया खून गिरता है।

1. **प्रथम श्रेणी बवासीर** - यह बवासीर की शुरुआत ही है। इसमें मरीज को कब्ज रहती है, जो बिमारी को बहुत जल्दी बढाने की वजह भी होती है। इसमें शौच के समय हल्का दर्द व शौच के बाद खून गिरता है। इस समय मरीज स्वयं मस्सों को महसूस नहीं कर पाता।
2. **द्वितीय श्रेणी बवासीर** - इसमें मरीज को शौच के समय गुदा मार्ग से मस्से बाहर निकलते महसूस होते हैं, जो शौच के बाद स्वयं ही अंदर चले जाते हैं।
3. **तृतीय श्रेणी बवासीर** - इसमें शौच के समय मस्से जब बाहर को निकलते हैं तो बिना हाथ से अंदर किए स्वयं अन्दर नहीं जाते हैं।
4. **चतुर्थ श्रेणी बवासीर** - इसमें मस्से गुदा मार्ग से बाहर ही निकले रहते हैं तथा हाथ से अन्दर करने पर पुनः बाहर आ जाते हैं।

बिमारी की फोटो के लिए क्लिक करें।

बवासीर बिमारी से बचाव कैसे हो ?

बवासीर मुख्यतः कब्ज के कारण व आलसी जीवन जीने वालों को होती है, इसलिए भोजन खूब चबा - चबा कर करना चाहिए तथा खूब व्यायाम व घूमना फिरना चाहिए। तली भुनी चीजें व मसालेदार भोजन, फास्ट फूड का प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये सभी चीजें पाचन प्रणाली को खराब करने वाली होती हैं। भरपूर पानी का सेवन करना चाहिए, इससे खाना आराम से पचता है तथा स्वास्थ्य बना रहता है। शौच से पाहले 2 से 5 गिलास तक हल्का गर्म पानी पीना चाहिए, इससे शौच खुल कर आता है। शौच के समय जोर लगाना इस बिमारी को बुलावा भेजना है, इसलिए शौच तभी जाएं जब शौच करने की पूर्ण इच्छा हो।

बवासीर की चिकित्सा -

बाहरी बवासीर में मस्सों को निकालना ही एकमात्र उपचार है। आयुर्वेदिक क्षार सूत्र पद्धति से बिना ऑपरेशन के ही केवल क्षार सूत्र लगाने से ही मस्सा 6 से 10 दिन के भीतर स्वयं ही गिर जाता है। यह अति सरल चिकित्सा है। इस दौरान मरीज को हस्पताल में दाखिल रहने की भी आवश्यकता नहीं होती। यह उपचार केवल एक घन्टे में ही हो सकता है। लेकिन इस उपचार के बाद मरीज को बिमारी के अनुसार एक सप्ताह से एक माह तक घर पर आराम करने की जरूरत हो सकती है।

आंतरिक बवासीर में प्रथम श्रेणी में दवा आदि से ही उपचार किया जाता है, क्योंकि इस अवस्था में मस्से छोटे होते हैं तथा क्षार सूत्र से उपचार होने लायक बडे नहीं होते। बाकी द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ श्रेणी की बवासीर में मस्सों को निकालना ही स्थाई उपचार है। इसमें भी आयुर्वेदिक क्षार सूत्र मस्सों की जड में लगाया

जाता है जिसके प्रभाव से मस्से 6 से 10 दिन के भीतर ही स्वयं कट कर मल के साथ निकल जाते हैं तथा बिना आपरेशन के ही मरीज को बिमारी से छुटकारा मिल जाता है।

इस चिकित्सा के अलावा सर्जरी, रबड बैण्ड, लेजर, ठण्डी विधि, आदि से भी उपचार किया जा सकता है। रासायनिक पदार्थ का टीका जिसे आमतौर पर बवासीर का टीका भी कहा जाता है, के द्वारा भी कुछ चिकित्सक उपचार का दावा करते हैं जो आजकल निरर्थक साबित हो रहा है। उपचार के ये सभी तरीके क्षार सूत्र के मुकाबले बहुत कम कारगर हैं तथा कुछ तो बहुत महंगे भी हैं जो आम आदमी वहन नहीं कर सकता।

बिमारी की शुरूआत में खून आना, दर्द होना या खुजली होना आमतौर पर बवासीर नहीं होती है। यह केवल फिशर या गुदचीर की दिक्कत हो सकती है, जिसका बहुत सरल तरीके से बिना आपरेशन उपचार हो सकता है। इसका वर्णन आगे किया गया है। मल के साथ खून केवल बवासीर में ही नहीं गिरता है अतः कुशल चिकित्सक से पूर्ण जांच करवाए बिना उपचार नहीं करवाना चाहिए।

फिशर, क्या है ?

गुदा भाग में होने वाले जख्मों को ही परिकर्तिका, गुदचीर या फिशर (Fissure) कहा जाता है। गुदा भाग में पाई जाने वाली बिमारियों में यह सबसे दुख दायक बिमारी है।

फिशर होने की वजह तथा इसके लक्षण क्या हैं ?

गुदा भाग की शारीरिक बनावट में एक स्फिंक्टर (sphinctor) होता है जिसे आमतौर पर रबड का छल्ला कहा जाता है। इसका कार्य गुदा भाग को सिकोड कर रखना होता है ताकि मल स्वयं ही बाहर न गिरने लगे, लेकिन मलत्याग के समय यह लचीले रबड की तरह फैल जाता है ताकि मलत्याग सुगमता से किया जा सके। कभी कभी कब्जियत के कारण कडा मल शौच के समय उस रबड के छल्ले को उसकी खिंचने की क्षमता से अधिक खींच देता है जिसकी वजह से गुदा के किनारों पर घाव बन जाते हैं। जिनसे मल के साथ एक लाइन की तरह खून भी कभी कभी आ जाता है तथा कभी कभी खून बूंद बूंद करके भी गिरता है। ये घाव बेहद पीडादायक होते हैं, यह पीडा 5 मिनट से लेकर पूरे दिन तक हो सकती है। इस दर्द से परेशान मरीज कई बार खाना तक छोड देते हैं, क्योंकि शौच के समय होने वाली पीडा बहुत दुखदायक होती है। ठीक उपचार के अभाव में कई दिनों तक जब इस दर्द से उन्हें छुटकारा नहीं मिलता तो कुछ नासमझ तो आत्महत्या करने की भी सोचने लगते हैं। घाव हल्का होने पर केवल हल्की चुभन, जलन या खुजली हो सकती है। यही बिमारी आगे चल कर बवासीर की वजह बनती है अतः इसी अवस्था में उपचार करवाने में ही मरीज की भलाई है। जिसके बाद आगे चल कर बवासीर होने का खतरा 90 प्रतिशत तक कम हो जाता है।

फिशर से बचाव कैसे हो ?

खान पान ऐसा होना चाहिए जिससे कब्ज न रहे। प्रतिदिन सुबह - शाम टहलना, खूब पानी पीना व फास्ट फूड से बचे रहना चाहिए।

फिशर की चिकित्सा -

मरीज को स्फिंक्टर के उपचार से ही फिशर से छुटकारा दिलाया जा सकता है। इसके साथ कब्ज निवारक दवा दी जाती है। बार बार फिशर होने पर स्फिंक्टरक्टोमी (sphinctorectomy) की जाती है जिसके बाद पुनः फिशर नहीं होता।

भगन्दर या फिस्टुला (Fistula) क्या है ?

यह मलद्वार से चारों तरफ 1 - 5 सेंटीमीटर की दूरी पर होने वाला फोडा या फुन्सी की तरह होती है, जो शरीर के अन्दर तक एक कठोर नली की तरह की संरचना होती है। इसका एक सिरा शरीर के अन्दर मलाशय में खुलता है। यह मवाद या पस से भरी रहती है। जब फुन्सी बाहर से बन्द हो जाती है तो मवाद अन्दर इकटठी होती रहती है तथा दर्दनाक स्थिति उत्पन्न कर देती है। पुनः मवाद बहने पर दर्द कम हो जाता है। यह अवस्था हर पंद्रह - बीस दिन में आती रहती है।

भगन्दर के कारण क्या हैं ?

गुदा भाग की ग्रंथियों में संक्रमण के कारण आमतौर पर भगंदर होता है। यह निम्न स्थितियों में हो सकता है। बवासीर के ऑपरेशन के बाद, बवासीर के टीके के बाद, बाल तोड के कारण, कोलाइटिस, क्षय या तपेदिक रोग के कारण, प्रमेह रोग में या चोट लगने से।

भगन्दर की चिकित्सा -

केवल दवा से इस बिमारी का स्थाई उपचार आमतौर पर नहीं हो पाता है। दवा से इस बिमारी में केवल कुछ समय के लिए आराम आ सकता है। व्याधिग्रस्त नलिका रूपी संरचना को खत्म करके ही इस बिमारी से स्थाई रूप से छुटकारा पाया जा सकता है।

सर्जरी या ऑपरेशन के द्वारा भी भगन्दर का उपचार किया जा सकता है लेकिन इसमें पुनः भगन्दर होने की संभावना बहुत अधिक रहती है। ऑपरेशन काफी खर्चीला भी होता है जिसे हर कोई वहन नहीं कर सकता। हाई एनल फिस्टुला (High Anal Fistula) में ऑपरेशन करने से मरीज को इनकॉन्टिनेन्स (Incontinence) होने की संभावना बहुत अधिक रहती है। इसमें मरीज का मलत्याग पर नियंत्रण समाप्त हो जाता है तथा उसे बिना पता लगे ही मल का रिसाव होता रहता है। इसलिए कुशल सर्जन इसमें ऑपरेशन की सलाह आमतौर पर नहीं देते।

आयुर्वेदिक क्षार सूत्र द्वारा भगन्दर से आसानी से बिना ऑपरेशन छुटकारा पाया जा सकता है। उपचार की इस पद्धति में दवा से उपचारित क्षार सूत्र को यंत्रों की सहायता से व्याधिग्रस्त नलिका के आरपार डाला जाता है तथा हर 5 से 10 दिन के अंतराल पर इसे बदला जाता है। हर सप्ताह नलिका अन्दर से कटती रहती है तथा जख्म भी अन्दर से भरता रहता है। अंत में व्याधिग्रस्त नलिका कट कर पूरी ही बाहर निकल आती है तथा जख्म भी 2 - 4 दिन में भर जाता है। इस उपचार से मरीज को बिना ऑपरेशन के ही भगन्दर से स्थाई रूप से छुटकारा मिल जाता है। इस तकनीक से उपचार करने पर पुनः भगन्दर होने की संभावना न के बराबर रहती है। इसके कोई साईड इफैक्ट भी नहीं हैं।

क्षार सूत्र क्या है ?

आयुर्वेदिक ग्रन्थों व चिकित्सकों के अनुसार क्षार सूत्र को जर्मनी से आयातित एक खास प्रकार के धागे पर खास आयुर्वेदिक दवाओं के सार की 21 बार भावना देकर तैयार किया जाता है तथा जीवाणुमुक्त करके प्रयोग किया जाता है। कुछ चिकित्सक इसमें कत्था, फिटकरी आदि मिलाने की सलाह भी देते हैं। क्षार सूत्र चिकित्सा जिन आयुर्वेदिक महाविद्यालयों में उपलब्ध है उनमें उत्तर प्रदेश में बनारस स्थित काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, राजस्थान में जयपुर स्थित आयुर्वेद संस्थान, गुजरात में जामनगर स्थित गुजरात आयुर्वेद महाविद्यालय के अलावा हैदराबाद, गुवाहाटी, मुम्बई, नागपुर, बरेली, अमरावती व हिमाचल प्रदेश के आयुर्वेदिक हस्पतालों में भी यह चिकित्सा उपलब्ध है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिशद Indian Council of Medical Research (ICMR) ने दस सालों तक इस तकनीक का देश के चारों महानगरों के बडे हस्पतालों में परीक्षण करके इसे सबसे कारगर व 100 प्रतिशत सुरक्षित बताया है।

क्षार सूत्र पर अधिक जानकारी के लिए यहां पर क्लिक करें।

गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर द्वारा क्षार सूत्र पर की गई रिसर्च डाउनलोड करने के लिए यहां पर क्लिक करें।

क्षार सूत्र पर रिसर्च पेपर डाउनलोड करने के लिए दूसरा लिंक।

क्षार सूत्र द्वारा उपचार के फायदे -

1. मरीज को ऑपरेशन करवाने की आवश्यकता नहीं है।
2. मरीज को हस्पताल में दाखिल नहीं रहना पडता।
3. मरीज हल्का फुल्का काम कर सकता है।
4. अधिक महंगे एण्टीबायोटिक (Antibiotics) खाने की आवश्यकता नहीं।
5. ऑपरेशन की तरह साईड इफैक्ट होने का डर नहीं।
6. पुनः भगन्दर होने की संभावना न के बराबर।
7. सर्जरी के मुकाबले काफी कम कीमत में उपचार संभव।

सिकाई का तरीका -

इलाज के बाद मरीज को सिकाई की आवश्यकता होती है, यह खून का दौरा बढा कर जख्म भरने में मदद करती है तथा इससे जख्म की सफाई भी अच्छी प्रकार से हो जाती है।

सिकाई के लिए पानी ज्यादा गर्म न हो। आधी बाल्टी गर्म पानी चौडे तसले में डाल कर उसमें चौथाई चुटकी लाल दवा, पोटाशियम परमैगनेट डाल कर उसमें आराम से बैठ जाएं। दो चार मिनट में जब पानी ठण्डा महसूस होने लगे तो उसमें से दो मग पानी निकाल कर उतना ही तेज गर्म पानी और मिला दें ताकि पानी सहन करने लायक गर्म बना रहे। एक दिन में 4 - 8 बार तक सिकाई अच्छी रहती है तथा हर बार करीब 20 - 25 मिनट तक सिकाई होनी चाहिए।

मरीजों के लिए हिदायतें -

1. कोई जोर का, वजन उठाने का, झटके का या सफर का काम न करें।
2. मलत्याग के समय कभी भी जोर न लगाएं। कब्ज ज्यादा हो तो कब्ज वाली दवा बढाई जा सकती है।
3. पानी में बैठ कर की जाने वाली सिकाई मरीज के लिए सबसे जरूरी है। मस्सा कटने से होने वाले दर्द/चुभन/जलन सिकाई से एकदम खत्म हो जाते हैं।
4. सिकाई दिन में 5 - 8 बार अच्छी रहती है। एक बार में लगातार 20 - 25 मिनट तक सिकाई जरूरी है।

5. खाने पीने में 5 - 7 दिन तक तली चीजें, चाय, अचार, शराब, नशे वाली चीजें तथा मिर्च वाली सब्जी का उपयोग न करें।
6. खिचडी, दलिया, दूध, दही, लस्सी, पपीता, कच्ची सलाद जैसे गाजर मूली खीरा आदि का सेवन हाजमा ठीक रखता है व कब्ज नहीं होने देता।
7. मस्सा कटने की प्रक्रिया में नीचे लटकने लगता है, सिकाई के समय जब दर्द व चुभन खत्म हो जाए तो मस्से को हल्का दबाव देकर अन्दर कर लेना चाहिए।
8. मस्सा कटने से बने जख्म में से मल त्याग के समय 8 - 10 बूंद तक खून आ सकता है। इससे परेशान न हों। अधिक खून आने पर डॉक्टर से सलाह करें।
9. मस्सा क्षार सूत्र के असर से 6 - 10 दिन के भीतर जड से कट कर मल के साथ ही निकल जाता है। मस्सा कटने से गुदा में हल्की सूजन आ सकती है जो समय के साथ अपने आप ठीक हो जाती है।

20 - 22 सालों से बवासीर से पीडित एक मरीज रिसाल सिंह, उम्र 70 साल, निवासी सासरोली जिला झज्जर, हरियाणा, भारत का कथन -

मैं रिसाल सिंह सासरोली का रहने वाला हूं। मैं 20 - 22 सालों से बवासीर से पीडित था तथा इस दौरान 10 - 12 बार बवासीर का टीका लगवाने के बाद भी मस्सों से छुटकारा नहीं मिल पा रहा था। पहले तो डॉ0 ने कहा था कि एक ही टीके में बवासीर गारंटी से खत्म हो जाएगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ तथा मस्सों की वजह से शौच के समय भयंकर परेशानी का सामना करना पडता था। तब मेरा संपर्क डॉ0 कृष्ण वर्मा से हुआ। उन्होंने अच्छी तरह से जांच करके मुझे पूर्ण रूप से बिना ऑपरेशन के 10 दिन में ही मस्से खत्म करने का आश्वासन दिया। पहले तो मुझे बिल्कुल यकीन नहीं हुआ क्योंकि जो इलाज बवासीर के 10 - 12 टीके लगवाने के बाद भी नहीं हुआ वह केवल 10 दिनों में ही बिना ऑपरेशन के कैसे संभव है। तब डॉ0 कृष्ण वर्मा ने मुझे इस इलाज के बारे में विस्तार से बताया कि यह टीके वाले इलाज से बिल्कुल अलग प्रकार का इलाज है। यह आयुर्वेदिक क्षार सूत्र तकनीक से होता है जिसमें मस्से की जड में दवा वाला क्षार सूत्र लगाया जाता है जो मस्से की जड को काट देता है तथा मस्सा 6 - 10 दिन के भीतर ही कट कर मल के साथ निकल जाता है। अपने परमात्मा को याद करके मैने डॉ0 कृष्ण वर्मा से इलाज करवाया अब करीब 10 साल होने को हैं, मैं इस बिमारी से पूर्ण रूप से छुटकारा पा चुका हूं। डॉ0 साहब ने तो मेरा बुढापा सुधार दिया।

रविन्द्र, उम्र 28 साल, निवासी सुबाना, जिला झज्जर, हरियाणा, भारत का कथन -

मुझे काफी समय से गुदा से मस्से निकलते महसूस होते थे जिनसे खून तो बहुत ज्यादा नहीं आता था लेकिन सारा समय गुदा में से फुलावट सी बाहर को आती रहती थी जिसकी वजह से मैं काफी परेशान रहता था। बवासीर के टीके वाले इलाज के बारे में मैने काफी सुन रखा था कि यह असरदार नहीं है। इससे केवल कुछ समय के लिए ही आराम मिल पाता है। इसलिए मैने एक बंगाली से इलाज करवाया लेकिन मस्सों से छुटकारा नहीं मिला। बाद में पता चला कि अधिकतर ऐसे क्लीनिक चलाने वाले डॉ0 होते ही नहीं, सिर्फ ढोंग करके लोगों को बेवकूफ बनाते हैं। बंगाली से मैने जब उसकी डिग्री के बारे में जानकारी लेनी चाही तो वह बगलें झांकने लगा।

तब मुझे डॉ0 साहब के बारे में मेरे एक साथी ने बताया जो खुद बवासीर से पीडित था व डॉ0 साहब से 5 - 6 साल पाहले इलाज करवा चुका था व अब बिल्कुल ठीक था। उसकी सलाह पर मैने डॉ साहब से इलाज करवाया तथा जैसा उन्होने कहा था कि मस्से 10 दिन के भीतर ही कट कर गिर जाएंगे, ऐसा ही हुआ। अब मैं पूर्ण रूप से बीमारी से छुटकारा पा चुका हूं व सामान्य जीवन व्यतीत कर रहा हूं, वरना इस बिमारी ने और बंगाली जैसे हकीमों ने तो मार ही डाला था।

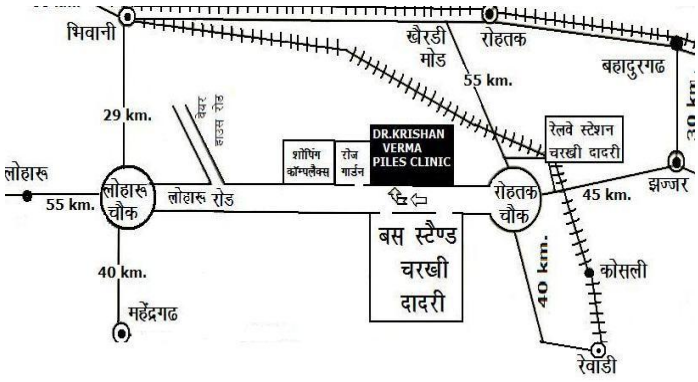

क्लीनिक की जगह का रेखाचित्र

बडे रेखाचित्र के लिए यहां पर क्लिक करें।

बडे रेखाचित्र के लिए दूसरा लिंक।

ई-मेल करें – info@pilesclinicdadri.com
drkrishanckd@gmail.com